कामिनी

(इतिहासिक उपन्यास)

बाबू बालमुकुन्द बर्मा लिखित

बाबू गंगाप्रसाद वर्मा द्वारा

प्रकाशित

काशी

कल्पतरु प्रेस में छपा

१६००

पहली वार १००० | दाम एक आना

भूमिका

उपन्यास प्रेमियों के आगे आज मेरी यह चौथी भेंट है। मुझे यह कब आशा थी कि हिन्दी रसिक मेरे लिखे उपन्यासो का आदर करेंगे पर नहीं इन थोडे ही दिनो में उपन्यास प्रेमियों ने मेरे उत्साह को अधिक बढाया है अस्तु इस हेतु मैं उन महाशयों को अनेक धन्य बाद देताहुँ और भविष्य में आशा रखताहूँ कि वे सज्जन इसी प्रकार से मेरे उपर कृपा दृष्टि रक्खेगे जैसे कि अब है।

आप लोगो का कृपा भिलाषी-

श्री बालमुकुन्द वर्म्मा

सत्ती चौतरा काशी।

समर्पण

श्री मान् राजा पृथ्वी सिंह साहब बहादुर
रईस उमरी

सौजन्यशील

आप हिन्दी के रसिक हैं उपन्यास के प्रेमी हैं, तब हम क्यों न आज इस "कामिनी,, नामक उपंन्यास को आप के अर्पण करें।

समर्पक

बालमुकुन्द बर्म्मा
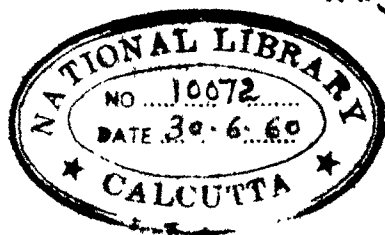
कामिनी उपन्यास

॥ पहिली किरन ॥

शत्रु अब तक मुंगेर का आक्रमण किये हुये हैं, राजा टोडर मल अभी तक अपनी निपुणता से दुर्ग को बचाये हुये हैं, यह अवसर भी एका एक घबड़ाने का नहीं था, क्योंकि शत्रु की सेना अभी बहुत दूर पर है।

हां राजा टोडर मल अपने पांचसौ चुनेहुये बहादुर सवारों को ले शत्रु के सेना का ठीक अनुमान करने के लिये दुर्ग से प्राय: आधकोस तक अपने को हर तरह से छिपाये हुये चले आये हैं,

दुर्ग से आये हुये पांचसौ सवार राजासे कुछ दूर पर हट २ कर चल रहे हैं। इसी प्रकार से अपने को छिपाये यह लोग जा रहेथे, कि एका एक चार सिपाहियों ने जंगल मेंसे निकल कर राजा पर धावा किया, राजा के सवार अभी पहुंचने भी नहीं पाये थे, कि उन चार सिपाहियों मेंसे एक ने राजापर तलवार चलाने की इच्छा से तलवार म्यानसे बाहर खींचली, और अभी वह वार करने नहीं पायाथा कि पेड़ों के झुण्ड से एक सवार [जोकि मुंह पर एक वस्त्र डाले था] निकल कर तीर के तरह आपहुंचा. और शीघ्रता के साथ आगे बढ़कर उस सिपाही को "जो राजापर वार किया चाहता था," सब

बार का। एक हाथ ऐसा मारा कि वह सिपाही का सिर भुट्टे के तरह कटकर पृथ्वी पर जा गिरा इस सवार की ऐसी बहादुरी को देख वह तीनो आश्चर्युत होगये, और शीघ्रतासे पेड़ो के झुण्ड में घुसकर गुप्त हो गये।

आये हुये सवार ने मुंह परसे वस्त्र पोछि उलट दिया. राजा देखतेही बोलउठे साबस! बहादुर क्या तुम्हीहो?

॥ दूसरी किरन ॥

इन्द्रनाथ* इसी तरह पर कामो में सफलता प्राप्त कर रहा है। दिन दिन उसकी प्रशंसा चारो ओर होरही है, जब कभी अवसर पाता है अपने ५०० सवारो ही से शत्रु को दिक कर देता है। जहां कहीं शत्रु की सेना का पता जासूसों से सुन पाताहै. महाराज से आज्ञा लेकर उनपर जा टूटता है और उनको काट मार कर दुर्ग में आ पहुंचता है, इस तरह बारम्बार हारकर शत्रु घबरा गयेहैं, लोग इन्द्रनाथ की प्रशंसा कर रहे. थे कि दूर से धूल उड़ती दिखलाई दी. सबमें खलबली पड़गई लोग उसी तरफ देखने लगे, पलक मारते में एक सवार शीघ्रताके साथ घोड़ा दौड़ाता हुआ चला आया घोड़ा इतना शीघ्र आयाथा कि उधर सवार ने पीठ खाली करी और इधर घोड़ा पृथ्वी पर गिरा. और तड़प२ कर म-

*महराज के मंत्री वयस २२ वर्षको है

र गया।

आये हुये जासूस ने महाराज को खबर दीकि हमारी सेनाके किसी दुष्ट सिपाही ने शत्रु को खबर करदीथी कि आज महाराज दुर्ग से बाहर निकल कर शत्रु के सेना देखने आवेंगे, इस लिये चार सिपाही वार करने के लिये जंगल में छिपेथे

महाराज- हां तुम्हारा कहना सब ठीक है. आज उस परमात्मा की मुझपर कृपाथी कि मै कालके ग्रास से बचगया, इस बातमें इन्द्रनाथ † के बहादुरीकि जितनी प्रशंसा को जाये वह थोड़िही है।

जासूस- अब विलम्ब न कीजोये क्योंकि उनके जासूसने सेनामे खबर करदी है कि आप बीहड़घघोंटा जंगल की राहसे आरहे हैं इसकर २००० सवार शत्रु के आपके ऊपर छूटे हैं।

महाराज की आज्ञापा इन्द्रनाथ ने सीटी बजाई जिसे की ५०० सवार इकट्ठा हो गये, और दुर्ग की ओर घोड़े छाड़ दिये गये, परन्तु जब दुर्ग के पास पहुंचे तब खाई*के पुलको टूटा हुआ पाया अबतो वह सबकोई चकराये क्योंकि दुर्ग में जाने को और कोई राह नहींथो।

सवार- तैर कर निकल चले।

राजा जब तक हम सब पार होंगे शत्रु सिर पर

---

† इन्होंनेही महराज के प्राण बचायेथे, और उस आदमी का सिर काटाथा

* यह पुल उठजया होता है।

बार का एक हाथ ऐसा मारा कि उस सिपाही का सिर भुट्टे के तरह कटकर पृथ्वी पर जा गिरा इस सवार की ऐसी बहादुरी को देख वह तीनो आश्चर्युत होगये, औ- र शीघ्रतासे पेड़ो के झुण्ड में घुसकर गुम्म हो गये।
आये हुये सवार ने मुंह परसे वस्त्र पीछे उलट दिया. राजा देखतेही बोलउठे साबस! बहादुर क्या तुम्हीहो?

॥ दूसरी किरन ॥

इन्द्रनाथ* इसी तरह पर कामो में सफलता प्राप्त क- र रहा है। दिन दिन उसकी प्रशंसा चारो ओर होरही है, जब कभी अवसर पाता है अपने ५०० सवारो ही से शत्रु को दिक कर देता है। जहां कहीं शत्रु की सेना का पता जासूसों से सुन पाताहै. महाराज से आज्ञा ले- कर उनपर जा टूटता है और उनको काट मार कर दु- र्ग मेंआ पहुचता है, इस तरह बारम्बार हारकर शत्रु घबरा गयेहै, लोग इन्द्रनाथ की प्रशंसा कर रहे. थे कि दूर से धूल उड़ती दिखलाई दी. सबमें खलबली पड़गई लोग उसी तरफ देखने लगे, पलक मारते में एक सवार शीघ्रताके साथ घोड़ा दौड़ाता हुआ चला आया घोड़ा इतना शीघ्र आयाथा कि उधर सवार ने पीठ खाली क- री और इधर घोड़ा पृथ्वी पर गिरा. और तड़प२ कर म-

*महराज के मंत्री वयस २२ वर्षकी है

र गया ।

आये हुये जासूस ने महराज को खबर दीके हमारी सेनाके किसी दुष्ट सिपाहीने शत्रु को खबर करदीथी कि आज महाराज दुर्ग से बाहर निकल कर शत्रु की सेना देखने आवेंगे, इस लिये चार सिपाही वार करने के लिये जंगल में छिपेथे

महाराज- हां तुम्हारा कहना सब ठिक है. आज उस परमात्मा की मुझपर कृपाथी कि मै कालके ग्रास से बचगया, इस बातमें इन्द्रनाथ † की बहादुरीकि जितनी प्रशंसा की जाये वह थोड़िही है ।

जासूस- अब बिलम्ब न किजीये क्योंकि उनके जासूसने सेनामें खबर करदी है कि आप बोहड़घर्घाटा जगल की राहमें आरहे हैं इसकर २००० सवार शत्रु के आपके ऊपर छूटे हैं ।

महाराज को आज्ञापा इन्द्रनाथ ने सीटी बजाई जिस्से की ५०० सवार इकट्ठा हो गये, और दुर्ग की ओर घोड़े छाड़ दिये गये, परन्तु जब दुर्ग के पास पहुंचे तब खाई * के पुलको टूटा हुआ पाया अबतो यह सबकाई चकराये क्योंकि दुर्ग में जाने को और कोई राह नहीथी।

सवार- तैर कर निकल चलै ।

राजा जब तक हम सब पार होंगे शत्रु सिर पर

---

† इन्होंनेही महराज के प्राण बचायेथे, और उस आदमी का सिर काटाथा

* यह पुल उठऊआ होता है ।

पहुंच जांयगी और सबके सब मारे जायेंगे।

सवार- अब हम लोगों के बहादुरी दिखाने का समय है, आज्ञा दीजियें तो सामहने होकर खड़े और शत्रु को लड़ाई में उलझाय रक्खें जब तक की पुल न तैयार हो।

राजा- अच्छी बात है (इन्द्रनाथसे) तुम सेनाके सेना नायक हो!

इन्द्रनाथ- सेवक के प्राण जानेपर भी जो कुछ हो सकेगा उसे कभी उठा नही रक्खेगा।

इतना कहकर इन्द्रनाथ ने सौ२ सवारो की पांच कतार धनुष के तरह खड़ी की, प्रत्येक कतार में सौ सवार थे, जब एक कतार लड़ते२ थक जाती तो शीघ्र दूसरी कतार आगे को जाती इसी तरह सब कतार को लडने का अवसर मिल जाताथा। देखे ईश्वर विजै किसे देताहै

॥ तिसरी किरन ॥

पिछली ओर खाइ पर सवार लोग पेड़ काट काट कर पुल बना रहे थे, कहां शत्रु के दो हजार सवार इधर यह पांचसो सवार उनके आगे भला ये क्या कर सकते थे तौभी कुछ दिन तक इन्द्रनाथ के अधिकार मेंरहकर सवारों ने जो लड़ाइ के कवायद को शिक्षा पाइ थी वह आज अवसर पड़ने पर प्रगट होरही है।

इन्द्रनाथ ने ऐसी चतुराइ से कतार लगाइ थों कि वे-

क बार सौ से अधिक सिपाही लड़ही नहीं सकतेथे मत्रु का सम्पूर्ण परिश्रम इसी बात पर था कि यह कतार तोड़ी जाय और राजा तोडर मल पराजय पावे, वेलोग सदा क्रोधमें आकर चढ़ाई करते थे. परन्तु जिस प्रकार पहाड़ से टक्कर खाकर समुद्र पीछे हट जाताहै। उसी तरह शत्रु की सेना बार २ चढ़ाई करती और पीछे हट जाती थी।

इधर इनके सिपाहियोंकाभी उत्साह कुछ थोड़ा नहींथा। जिधर इन्द्रनाथ देखता की शत्रु का जोर अधिक है उधर ही आ पड़ता और अपने सिपाहि योंका मन बढ़ाता और कहता की देखो आज महाराज के रक्षा का कार्य तुम्हारे ही ऊपर है, आज चक्रवर्ती देहली की प्रसंसा का भार तुम्हारे ही हाथ मे है।

उधर शत्रुओंको आगे बढते देख महाराज ने घोड़े को एड लगाई और सेना के आगे बढ़कर बहादुरी दिखलाने लगे, इन्द्रनाथ भी घोड़ा कुदाकर वहीं जा पहुचा अब क्याथा सिपाहियों के उत्साह दुने होगये बहादुरो आगे बढ़ो इतना कहता हुआ इन्द्रनाथ आगे गया और शत्रु के सेनाको पीछे हटा दिया। और उधर पुलभी बनकर तैयारा होगया और राजा तोड़र मल जब तक उस पार न गये तबतक इन्द्रनाथ उधरही देखता रहा।

लड़ते२ इन्द्रनाथ के सरीर में घाव लग जानेसे रुधिर बह रहाथा अस्तु थोड़ी देर बाद ईन्द्रनाथ घोड़े पर से गिर कर मूर्छित हो गया इसे गिरते देख शत्रु के सवार एका एक चढ़ आये और इन्द्रनाथ को उठाकर अपनी सेना में लेगये।

उधर राजा तोडर मल उसपार जाके सोचने लगे की क्या कारण है बाहर यह उपद्रव हो और दूर्ग में सैकोड़ मनुष्य न आवे, पुल किसने तोड़ा अवश्य येलोग शत्रूसे मिले हैं।

इतने में सुनाकि इन्द्रनाथ पकड़ गया और उसे सब उठा के लेगये सुनकर राजा को बड़ाही दुःख हुआ पर करतेही क्या।

॥ चौथी किरन ॥

इन्द्रनाथ की जब मुर्छा छुटी तब उसने अपने को काबुलियां के हाथ में पाया, और अपने सिरपर दुष्ट जल्लाद को नगी तरवार लिये खड़ा देख बोल उठा कि जल्लादो शीघ्र अपना काम पुरा करना चाहिये क्योंकि लहुके बहनेसे मेरा शरीर घटा जाता है ऐसा नहोंकि देर होनेपर इस बातकि मुझे कुछ खवर न रहे की बहादुर लोग किस तरह पर प्राण त्यागते हैं।

मासूमी- मैं तुम्हारी दिलेरी को देख बहुत प्रशंन हुआ मगर चक्रवर्ती देहली जोकी तोडर मलके कहने से हमारी रियासत छिन लेना चाहते हैं। क्या यह कोइ अच्छी बात हैं।

इन्द्रनाथ- किसी के भले बुरे दिन बराबर नहीं रहते यन होतातो मुझे शाह अकबर के बागी अफगानो से लड़ने का अवसर ही क्यों मिलता

शत्रु० बहादुर पठान जीतेजी कभी किसी के अधिकार में नहीं रह सकते इसबात को तुम अच्छी तरह जानते होगे,

इन्द्रनाथ० बहादुर अवश्य शत्रु को क्षमा कर सकते हैं क्योंकि उन्हें तो अपने बिजय कि पूर्ण आशाहै. परन्तु भय भीत पठान जिसको अपने बिजय कि कुछभी आशा नहीं है भला वह क्या कर सकते हैं।

इन्द्रनाथ के ऐसी कड़ी बातों को सुन उसके नेत्र मारे क्रोध के लाल होगये, बैठे हुये आदमी देख रहे हैं कि अब मासुमी प्राण दण्ड की आज्ञा देतेहैं लेकिन इन्द्रनाथ के लहू बहुत बह जाने के कारण वह पृथवी पर गिर कर मुर्छित होगया। उधर मासुमी को आज्ञा हुई के यह कारागार में रक्खा जाये, और चारो ओर कड़ाई के साथ पहरा रहे,। केवल एक ब्राह्मण जो भोजन लेजाय और दूसरी दासी जोजूठे बरतन इत्यादि उठा लाया करे केवल इनके और कोई बिना मेरी आज्ञा के इसके समीप नजावे क्यों जो हमने कहा सो समझ गये न बस यहां से इसे ले जावो

॥ पांचवी किरन ॥

परमात्मा धन्य तेरी लीला, भला किसकी इतनी सक्ती है जो तेरी महिमा को वर्णन कर सके, आज बीर इन्द्रनाथ एक सुकोमल शय्या पर पड़े २ न मालुम किस

शोक सागर में गोता खा रहे हैं।

आह ? वह वीर जोकल किसी के अधिकार में न थी आज किसी दूसरे ही सम्राट के अधिकार में पड़ा हुआ है। उसके घाव पर जल सिंचित वस्त्र बंधे हुये हैं, । पूरब तरफ दिवार में एक छोटा द्वार है जिसमें मोटे २ लोहों के छड़ लगे हुये हैं, उसी राहसे ठण्ढी मन्द २ सुगंधित वायु आ उसके मनको प्रफुल्लित कर रही हैं।

थोड़ी देरमें मध्यान हुआ सामहने का किवाण खुला और एक ब्राह्मण थाली में भोजन और एक गिलास पानी रख कर उसी प्रकार किवाड़ को बन्द करता हुआ चला गया थोड़ी देर के उपरान्त इन्द्रनाथ शय्या पर से उठा और भोजन करके पुनः एक चटाइ पर जा बैठा सन्ध्या हुई एक दासी आकर दीप बाल गइ और उच्छिष्ट पात्र [जुठे वासन] उठाके लेगइ थोड़ी देरके उपरान्त वही ब्राह्मण मध्यान्ह के तरह भोजनदे किवाड़ बन्द करता चला गया, इन्द्रनाथ ने उठकर भोजन किया और पुनः अपने स्थान पर जा बैठा।

रात्री में अनुमान १० बजा होगा वही दासी फिर आइ और इन्द्रनाथ की ओर देखकर बोली प्राणवल्लभ! उठो- क्या चिन्ता कर रहे हो मैं तो तुम्हें कारागार से मुक्त करने के लिये भिक्षुकी बनी हो हूं शीघ्रता करो और मेरे वस्त्र पहिन कर यहां से चले जावो, बाहर कोइ पूछे तो अपना परिचे भिक्षुकी कह कर देना, बस अब विलम्ब मत करो यह वस्त्र रक्खे हैं पहिन कर चलेजावो

पाठक गण यह कैसी बातें हो रही हैं क्या कुछ

आप समझे अवश्य इसमे गूढ़ रहस्य भराहै। ऐसी बातो को सुनकर इन्द्रनाथ बडा चकित हुआ और बोल उठा प्यारी तुमकौन हो क्यासचमुच कामिनी रानी हो अ-हा तुमने मेरे लिये बडाही कष्ट उठाया यह तो कहोकि तुम यहां आई किस प्रकार से ?

कामिनी॰ यहां कि एक दासी से मिल कर मैं भी यहां की दासी हो गई बस फिर क्याथा काम हो गया, अहा आज इन्द्रनाथ की एक मात्र प्राण प्यारी कामिनी × इस कठोन कारा गार से मुक्त करने के लिये उपस्थितहै वाह वाह क्योंनहो पती ब्रता स्त्रीका मुख्य धर्म यही है कि अपने पति की सेवा करै।

लीजिये इन्द्रनाथ ने कामिनी के वस्त्र पहिन लिये औ र धीरे२ कारा गारके बाहर होगया हां चलते समय यह क-हगया कि प्यारी देखो घबड़ाना नही मैं बहुत शीघ्र आ ताहूं बाहर किसीने पुछा भी नहीं कि यह कौनगया।

प्रात: काल का समयहै ! मन्द मन्द शीतल वायु च-ल रही है पक्षीगण पेड़ की डालियों पर बैठे मन मा ना कल्लोल कर रहे हैं, ठीक ऐसे समय में एक गोली दां यसे आकर एक सिपाही को लगी वहतो अन्टा चित पृ थवीं पर गिर पड़ा और सिपाही भी चौकन्ने होगये इ-तने में बहुत से सवारों ने कारागार को घेर लिया और इन्द्रनाथ भीतर जा कामिनी को ले वहां से चलता हुआ दुर्ग पर पहुच कर सफीलों पर तोपे चढ़ादी, इस भयसे

× राजा तोडरमल के सेनापति राम लालकी कन्या है।

कि कदाचित पुन सत्रु न चढ आवें परन्तु वहां तो इन्द्र नाथ को ऐसी बहादुरी को देख सब दंग थे, फिर कुछ उपद्रव नही उठा और सांती रही।

॥ इति ॥